अध्यापिका की कलम से

भारती शर्मा*

वे आँखें,
वे मासूम आँखें।
प्यार से निहारती आँखें।
मुझे, शायद मेरे मुख को,
होठों का खुलना फिर बंद होना,
माँसपेशियों का तनाव, फिर विश्राम,
गर्दन का हिलना, फिर संभलना।
वे आँखें,
कुछ खोजती-सी आँखें,
मासूम-सी आँखें,
छोटी, नन्ही-सी अँगुली मुँह में दबाए,
निहारती आँखें।
मुझे, शारीरिक भंगिमाएँ नहीं
भावों को ढूँढती आँखें।
अपनी माँ-सा प्रेम, वात्सल्य, प्यार और दुलार पाने को,
सुकून और सुरक्षा चाहने को
ममता के आँचल-सी
स्पर्श कर जाती है, मुझे।

हाँ मुझे।
वो एकटक निहारती आँखें,
कक्षा में मुझ 'अध्यापिका' को।
सहला देती है इस 'अंर्तमन' को
और बताती है 'प्रज्ञा बुद्धि' को,
बिना बोले, बिना लिखे
मेरी 'भूमिका' मेरे 'कर्तव्य'।
एक 'अध्यापिका' की भूमिका तथा 'कर्तव्य'
अपने 'मासूम'
'प्रारंभिक विद्यार्थियों' के लिए।
वे आँखें,
एकटक निहारती आँखें
पढ़ाने को मुझे एक 'पाठ'
अनौपचारिक 'पाठ'।
एक 'अध्यापक' का 'कर्तव्य सार'।

*प्रोफेसर, शिक्षक-प्रशिक्षण एवं अनौपचारिक शिक्षा विभाग (आई.ए.एस.ई.), शिक्षा संकाय, जामिया मिलिया इस्लामिया, नई दिल्ली 110 025